Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 3rd August 2019, Revised on 8th August 2019; Accepted 16th August 2019

शोध–पत्र

उच्च.माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत अनाथ विद्यार्थियों के ई-लर्निंग के प्रति अभिवृति का अध्ययन

*** डॉ. चित्रा जीतेन्द्र सिंह**
(L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.)
(drchitrapalsingh@yahoo.com , 9410010561)

मुख्य शब्द – अनाथ-विद्यार्थी, ई-लर्निंग, ई-लर्निंग अभिवृति *(E-LAT) आदि।*

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षण प्राप्ति के आधुनिक माध्यमों में तकनिकी माध्यम प्रचलित है. ई-लर्निंग से प्रस्तुत अध्ययन में अनाथ विद्यार्थियों को केन्द्रस्थान पर रखते हुए उनकी अभिरुचि का अध्ययन किया गया है. प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के अमदाबाद शहर तक सिमित किया है. अध्ययन प्रतिदर्श के रूप में ५० अनाथ बच्चो का चयन किया गया है. आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित ई-लर्निंग अभिवृति मापनी का प्रयोग किया गया है. परिणाम में पाया गया है की ई-लर्निंग के प्रति अनाथ विद्यार्थियों की अभिवृति सकारात्मक है. साथ ही अनाथ कुमार और कन्याओ की अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया है.

प्रस्तवना

वर्तमान समय में हर क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है. परिवर्तन के इस दौर में शिक्षण प्रणाली भी अछूती नहीं रही. ज्ञान प्राप्ति ले लिए देश-दुनिया के सभी व्यक्ति एवं विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते है और अपने जीवन को उन्नत बनाते है. वर्तमान परिवर्तित समाज में पुराने तरीके और पद्धति से ज्ञान प्राप्ति संभव नहीं है. आज दुनिया के सभी क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ती है. अपनी इस जिज्ञासा और बढ़ते प्रतियोगतात्मक वातावरण में शिक्षण प्राप्ति में तकनिकी शिक्षण का काफी असरकारक साबित हो रहा है. ई-लर्निंग के माध्यम से विभिन्न तकनीक का प्रयोग करके सभी वर्ग के लोग ज्ञान प्राप्त कर रहे है.

समाज में आज भी कुछ वर्ग ऐसे है जिनकी और ध्यान देने की आवश्यकता महसूस होते हुए अनाथ बच्चो को केन्द्रस्थान में रखते हुए ई-लर्निंग के प्रति अभिरुचि का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है. वर्तमान अध्ययन में अनाथ बच्चो को शिक्षण प्राप्ति में ई-लर्निंग का योगदान और रूचि का प्रयास किया गया है.

शैक्षिक संस्थानों में ई-लर्निंग का प्रयोग व्यापक रूप से शैक्षिक प्रयोजन हेतु करते है. ई-लर्निंग बहुत अधिक अभिलेख और अधिगम क्षेत्र हेतु साधन उपलब्ध कराता है. ई-लर्निंग पोर्टल का प्रयोग अत्यधिक सहयोग करता है. व्यक्तिगत विद्यार्थियों

को अपने क्षमता के अनुरूप और गति के अनुसार ज्ञान प्राप्ति में सजग देता है. प्रस्तुत अध्ययन अनाथ विद्यार्थियों के ई-लर्निंग अभिरुचि के क्षेत्र में रूचि जानने का प्रयोग किया गया है.

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश निम्नलिखित है,

(१) उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ कुमार एवं कन्याओ के ई-लर्निंग अभिवृति का अध्ययन करना

(२) उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ कला एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों के ई-लर्निंग अभिवृति का अध्ययन करना

शोध परिकल्पनाएँ

(१) उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ कुमार एवं कन्याओ के ई-लर्निंग अभिवृति के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा

(२) उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ विद्यार्थियों के कला एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों के ई-लर्निंग अभिवृति के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप **"सर्वेक्षण-विधि"** पर आधारित है.

प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ विद्यार्थियों के 50 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है.

प्रतिदर्श चयन विधि

प्रतिदर्श के चयन के लिए अध्ययनकर्ता ने उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पद्धति का प्रयोग किया है.

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन का कार्यक्षेत्र गुजरात राज्य के **अहमदाबाद शहर** तक सिमित है. अध्ययन के लिए अनाथ-आश्रम के छात्रालय में रहनेवाले उच्च माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सिमित किया गया है.

शोध-उपकरण

प्रस्तुत अध्याय हेतु अध्ययनकर्ता ने स्वनिर्मित **"ई-लर्निंग अभिवृति मापनी"** (E-LAT) का प्रयोग किया गया है. अभिवृति मापनी की विश्वसनीयता का मान 0.71 ज्ञात हुआ है.

दत्त संकलन

आंकड़ों के संकलन हेतु 2018-19 ई. में अध्ययनरत गुजरात के अहमदाबाद में अनाथ-आश्रम में छात्रालय में रहते विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है.

आंकड़ों का विश्लेषण

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है. आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य एवं मानक विचलन ज्ञात किया है. दो-चरो के माध्य अंतर का विश्लेषण करने हेतु टी-परिक्षण किया गया है. चरो के माध्य अंतर की सार्थकता को 0.05 विश्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया है.

सारणी - 1

उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ कुमार एवं कन्याओ के ई-लर्निंग अभिवृति के मध्य अंतर का अध्ययन

अनाथ विद्यार्थी	N	M	S.D.	टी-अनुपात	सारणी मान
कुमार	25	227.91	27.81	18.42	4.02*
कन्या	25	209.49	20.55		

*0.05 स्तर पर साथक

उपर्युक्त सारणी संख्या-1 के स्पष्ट होता है की अनाथ विद्यार्थियों के कुमार एवं कन्याओ में ई-लर्निंग अभिवृति के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है. माध्यमानो के आधार पर अनाथ कुमार विद्यार्थियों (227.91) की अपेक्षा कन्याओ (209.49) का मध्यमान बहुत कम है. अतः इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है की अनाथ विद्यार्थियों में कुमार छात्रों की ई-लर्निंग के प्रति अभिवृति कन्याओ की अपेक्षा अधिक पाई गई है. उपरोक्त सारणी से अपष्ट है की प्रस्तुत परिकल्पना-1 का अस्वीकार हुआ है.

सारणी - 2

उच्च-माध्यमिक स्तर के अनाथ विद्यार्थियोंमें कला एवं विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों के ई-लर्निंग अभिवृति के मध्य अंतर का अध्ययन

अनाथ विद्यार्थी वर्ग	N	M	S.D.	टी-अनुपात	सारणी मान
कला वर्ग	38	218.72	27.65	0.17	0.38
विज्ञानं वर्ग	12	218.55	15.36		

*0.05 स्तर पर असाथक

उपर्युक्त सारणी संख्या-2 से स्पष्ट है की कला वर्ग और विज्ञानं विद्यार्थियों के अनाथ विद्यार्थियों में ई-लर्निंग अभिरुचि के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है. मध्यमानो के आधार पर कला वर्ग के छात्रों (218.72) की अपेक्षा विज्ञानं वर्ग के

विद्यार्थियों (218.55) का मध्यमान काम है. अतः कहा जा सकता है की कला वर्ग के विद्यार्थियों की झुकाव ई-लर्निंगके प्रति क्षणिक अधिक है. जब की विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों की रूचि कम है. प्रस्तुत परिकल्पना-2 का स्वीकार किया गया है.

परिणाम:

अध्ययनकर्ता ने संशोधन के परैत आकड़ो के विश्लेषण के आधार पर महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुए है. अनाथ विद्यार्थियों के ई-लर्निंग अभिवृति का अध्ययन से प्राप्त हुआ के अनाथ कुमार और कन्याओ के ई-लर्निंग अभिवृति में सार्थक अंतर परैत हुआ है. जबकि कला वर्ग और विज्ञानं वर्ग के विद्यार्थियों में सर्तक अंतर पाया गया है.

निष्कर्ष:

प्राप्त परिणामो के निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा कसता है की ई-लर्निंग के प्रति अनाथ की अभिरुचि सकारात्मक है. अपने ज्ञान के विस्तार के लिए अनाथ विद्यर्थियों में काफी सकारात्मक जागरूकता देखने को मिली है. शिक्षा प्राप्ति के विविद माध्यमों और संसाधनों एवं पद्धति के समन्वय से ज्ञान प्राप्ति के उचित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है. आधुनिक शिक्षा में ई-लर्निंगएक नवाकर के रूप में अपनाया जा रहा है.

वैश्विक ज्ञान प्राप्ति एवं स्व अधिगम की प्राप्ति के लिए शिक्षण में तकनिकी के माध्यम से ई-लर्निंग शिक्षण का विस्तार बहेतर तरीके से हो सकता है. वर्तमान समय में सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य है. अनाथ बच्चो को अपने ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा की पूर्ति और बहेतर भविष्य के लिए शिक्षण प्राप्ति में ई-लर्निंग श्रेष्ठ विकल्प है.

सन्दर्भ सूचि:

(१) सिंह आर.के. (२००८) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, नरेंद्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसी दास.

(२) गुप्ता एस.पी. (२००७) व्यवहारपरक विज्ञानो में सांख्यिकी विधिया, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

*** Corresponding Author:**
डॉ. चित्रा जीतेन्द्र सिंह
(L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.)
(drchitrapalsingh@yahoo.com , 9410010561)